उ० म० वि० नत्थुपुर फुलवारीशरीफ, पटना

संजय कुमार
प्रभारी प्रधानाध्यापक
उ० म० वि० नत्थुपुर
फुलवारीशरीफ, पटना
मो०–7903556218
ईमेलः–sk087474@gmail.com

परिचय: उम्क्रमित मध्य विद्यालय, नत्थुपुर पटना–गया रोड परसा बाजार रेलवे स्टेशन के पास पिलर नं०–73 के सामने उपस्थित है। यह 2007 में प्राथमिक विद्यालय से उत्क्रमित मध्य विद्यालय बना। यह विद्यालय अपने नवाचारों के लिए जाना जात है। प्रत्येक वर्ग कक्ष के अलग–अलग नाम है वर्ग I देश की प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले कक्ष, वर्ग II विवेकानन्द कक्ष, वर्ग III रविन्द्रनाथ टैगोर कक्ष, वर्ग IV सुभद्रा कुमारी चौहान कक्ष, वर्ग V कल्पना चावला कक्ष, वर्ग VI प्रसिद्ध खगोल शास्त्री गणितज्ञ आर्यभट्ट कक्ष, वर्ग VII रामधारी सिंह दिनकर कक्ष, वर्ग VIII रामानुजन कक्ष (प्रसिद्ध भारतीय गणितज्ञ)।

वर्ग प्रथम से बच्चों का विद्यालय में प्रवेश होता है। उन्हें आस–पास के परिवेश से जिसे वे पूर्व से परिचित रहते हैं अंक ज्ञान, अक्षर ज्ञान का स्वयं आभास एवम् अभ्यास कराया जाता है। दो भाई, दो बहन, एक पेड़ इत्यादि। सारे शिक्षक समूह यह प्रयास करते हैं कि

विद्यालय सुरक्षित एवं आनन्दमयी स्थल है छात्र–छात्राओं को खुलकर अपनी बात रखने का प्लेटफार्म उपलब्ध कराया जाता है। यहाँ तो 100 से ज्यादा अभिभावक अरवल, जहानाबाद के और अन्य जिले के गाँव में किराया का घर लेकर बच्चों को इस विद्यालय में पढ़ाने के लिए रहते हैं।

स्वच्छता

प्रातः कालीन सभा में जो छात्र/छात्रा सबसे स्वच्छ रहते हैं उसे मंच पर बुलाकर ताली से उसका स्वागत किया जाता है। छात्र को सूरज एवं छात्रा को चंदा की उपाधि दी जाती है। इससे अन्य छात्र/छात्रा को स्वच्छ रहने की प्रेरणा मिलती है।

बाल संसद की भूमिका

विद्यालय में बाल संसद सक्रिय रूप से कार्य करती है। यह बच्चों में शुरू से जिम्मेदारी एवम् नेतृत्व करने की प्रेरणा देती है। प्रधानमंत्री, उपप्रधानमंत्री, अनुशासन मंत्री, उप मंत्री प्रातः कालीन सभा में सक्रिय रहते हैं। छोटे बच्चे को अभिभावक की तरह व्यवहार करते हैं। इससे छोटे बच्चों के अन्दर सुरक्षा का भाव पैदा रहता है। इस विद्यालय में अधिक उपस्थिति का कारण भी बनता है।

शिक्षा मंत्री

विद्यालय कें छात्र/छात्राओं के पास पुस्तक की उपलब्धता सुनिशिचित करते हैं। नई या पुरानी, लम्बी अनुपस्थिति किसी छात्र/छात्रा का है तो कारण पता करते हैं।

मीना मंच

मीना मंच की सदस्य अपनी टीम लीडर श्रीमती प्रतिमा कुमारी (प्र० शि०) के साथ सक्रिय भूमिका निभाती हैं। विद्यालय नहीं आने वाली बालिकों के कारणों का समाधान करने का प्रयास करती हैं।

पूर्ववर्ती छात्र/छात्राओं

विद्यालय के पूर्ववर्ती छात्र/छात्राओं को बुलाकर जो किसी कॉलेज में पढ़ते हैं तथा सेवा (Job) कर रहे हैं वर्तमान छात्र/छात्राओं के सामने उदाहरण पेश किया जाता है ताकि उनका उत्साहवर्धन हो सके। इसका सकारात्मक परिणाम विद्यालय में देखने को मिलता है।

स्वतंत्र, स्वसंचालित, भयमुक्त प्रतियोगी भावना के साथ सिखने–सिखाने की गतिविधि

वर्ग III से V तक छात्र/छात्राओं द्वारा श्याम पट्ट पर श्रुतिलेख का अभ्यास कराया जाता है, इसमें वर्ग मॉनीटर बाल संसद सक्रिय रहता है। छात्र/छात्रा एक के बाद एक करके श्याम पट्ट पर शब्द लिखते हैं जिससे की वह भयमुक्त वातावरण में ज्यादा सीखने ललायीत रहता है। यह क्रम वर्ग III से V तक चलता है। मध्यावधि के पश्चात यह कार्य चलता है। तीन वर्षों में उसके पास शब्दों को पहचानने के बाद साधारण, संयुक्त अक्षर का अच्छा ज्ञान हो जाता है जिससे की वह वर्ग VI में आते–आते पुस्तक पढ़ने और किसी विषय पर लिखने की प्रवृति पर विकास होने लगता है। यानि समझ का स्तर उँचा हो जाता है। वर्ग V तक पेंसिल से ही अनुमति मिलती है।

समस्या समाधान प्रवृति करने का विकास

यहाँ के छात्र/छात्राओं को समस्याओं को हल करने को दिया जाता है। इसी का परिणाम है कि एक बच्चे को Inspired Award के लिए चुना गया है। Topic है रेलवे लाइन के कम्पन से उत्पन्न तरंग र्उजा को Alarm System में जोड़कर मानवरहित रेलवे क्रॉसिंग के पास लगाकर जान–माल की रक्षा करना। यह विद्यालय मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग पर अवस्थित है। अनेक छात्र/छात्रा मानव रहित रेलवे क्रॉसिंग से होकर गुजरते हैं।

परियोजना कार्य मॉडल निर्माण

यहाँ तो वर्ग III से ही बच्चे पाठ्य (पाठ) समाप्ति के पश्चात् मॉडल बनाकर लाते हैं, यानि उनकी समझ विकसित हो रही है। यह प्रतीत होता है कि वर्ग VIII आठ तक समझ काफी विकसित हो जाती है।

शिक्षकों के अवकाश एवं अन्य स्थान प्रशिक्षण कार्य में रहने पर

छात्र/छात्राओं द्वारा पियर लर्निंग ग्रुप बनाकर वर्ग में शिक्षकों द्वारा पढ़ाये गए पाठ को अभ्यास करते हैं। यह लर्निंग Outcome का स्तर उँचा करता है।

Spot Text:-

अचानक किसी Topic पर अपने विचार लिखने को कहा जाता है। बोलने को कहा जाता है। यह देखन के लिए शिक्षकों द्वारा किए गए शैक्षणिक प्रयास का स्तर कहाँ तक पहुँचा। उनका समाज के प्रति क्या सोच विकसित हो रहा है। वे केवल स्वयं के बारे में सोच रहे हैं या अपने देश समाज के बारे में भी सोच रहे या नहीं।